एडी-ली के साथ अच्छा बर्ताव करो

वर्जिनिया, हिंदी : विदूषक

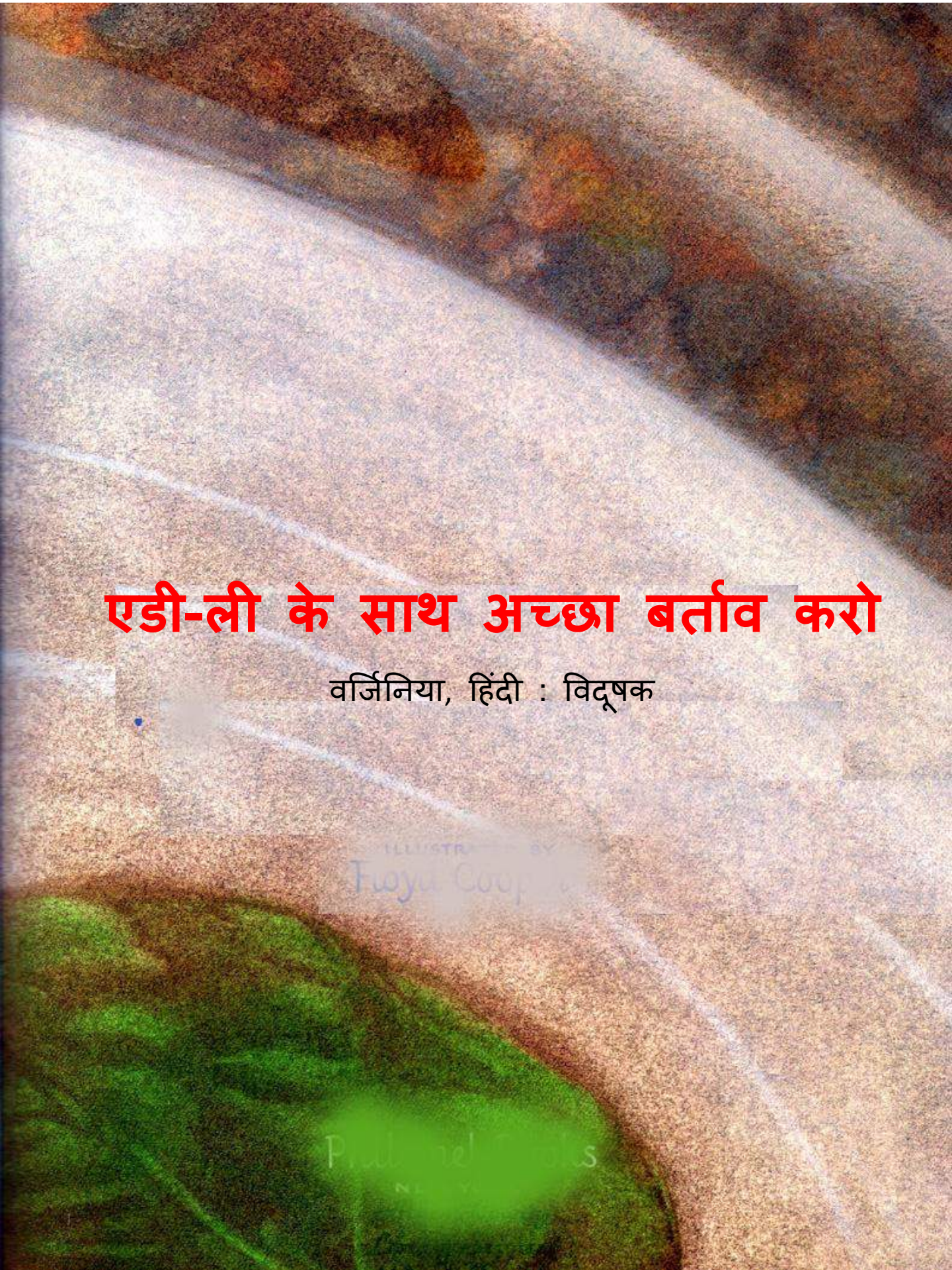

एडी-ली के साथ अच्छा बर्ताव करो

वर्जिनिया, हिंदी : विदूषक

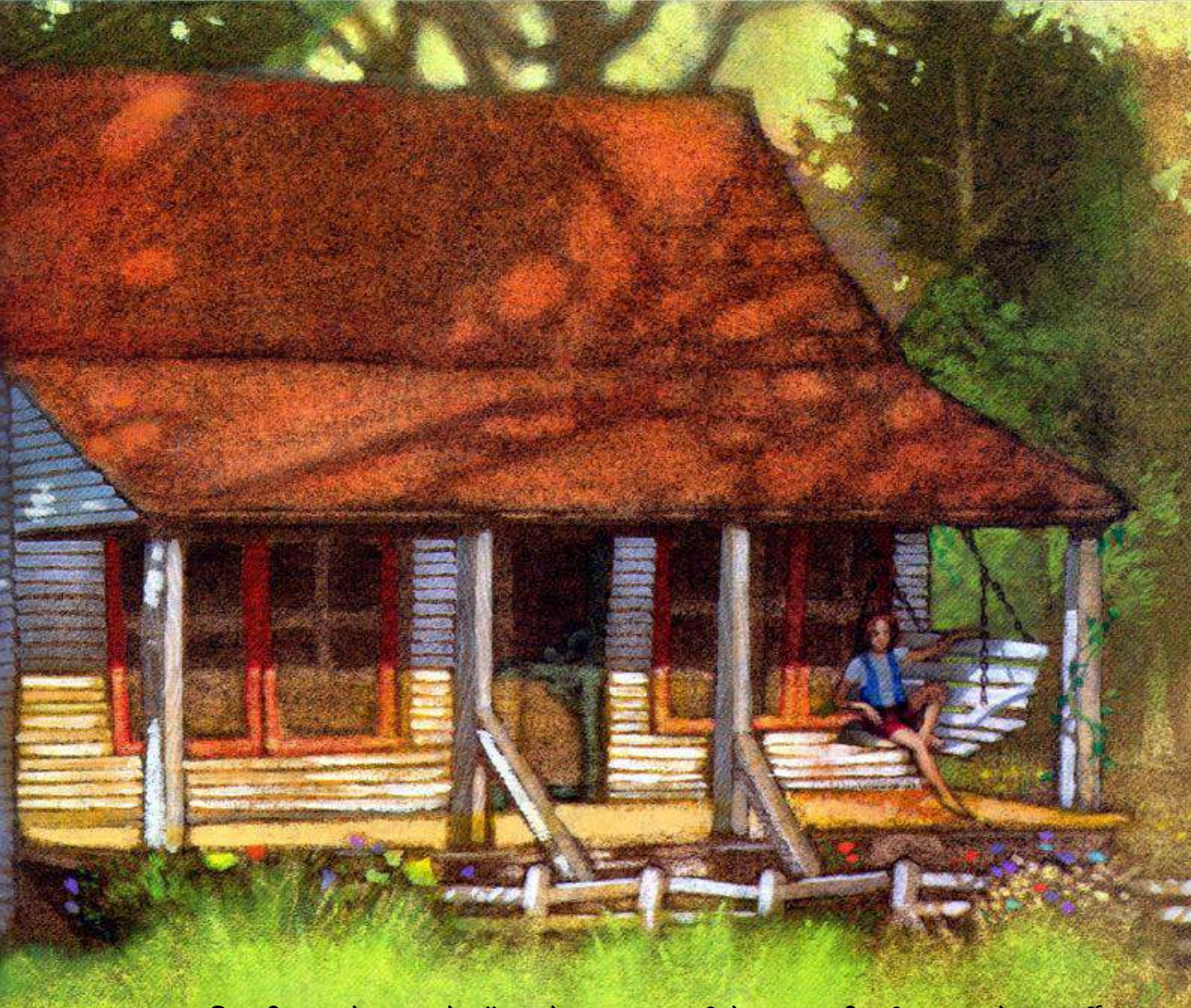

क्रिस्टी अपने बरामदे में झूले पर ऊपर-नीचे झूल रही थी. अब तेज़ गर्मी शुरू हो गई थी. उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वो उस भीषण गर्मी में आखिर क्या करे? फिर उसने पास में लगी बेल में से एक पत्ता तोड़ा. उसके घर के बिल्कुल सामने एडी-ली रहता था. वो बरामदे की सीढ़ियों पर बैठा आइसक्रीम खा रहा था.

“अब गर्मी भर वो मेरा पीछा करेगा और मुझे परेशान करेगा,” क्रिस्टी ने सोचा.

माँ ने कहा था कि उसे एडी-ली के साथ अच्छा बर्ताव करना चाहिए. क्यों? इसलिए क्योंकि वो बहुत अकेला था. क्योंकि, कोई भी एडी-ली की परवाह नहीं करता था. क्यूंकि वो दूसरों से बिल्कुल “अलग” था.

माँ के अनुसार भगवान ने उसे कुछ अलग ही बनाया था. पर क्रिस्टी को अपनी माँ की बात कुछ ख़ास जमी नहीं - भगवान भला कैसे गलती कर सकता था? भगवान गलतियाँ नहीं करता था – और अगर उसने कभी कोई गलती की थी, तो वो एडी-ली था.

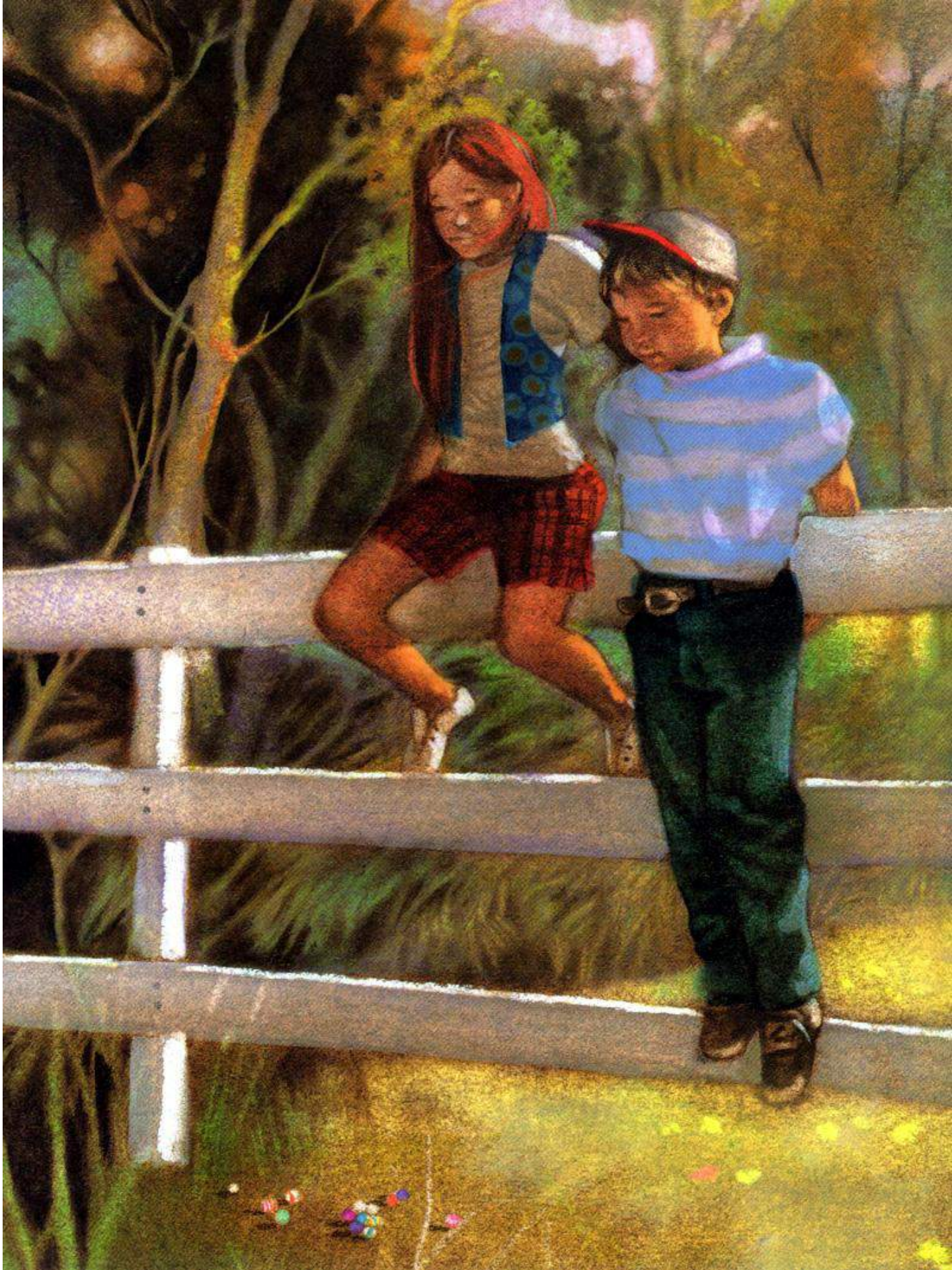

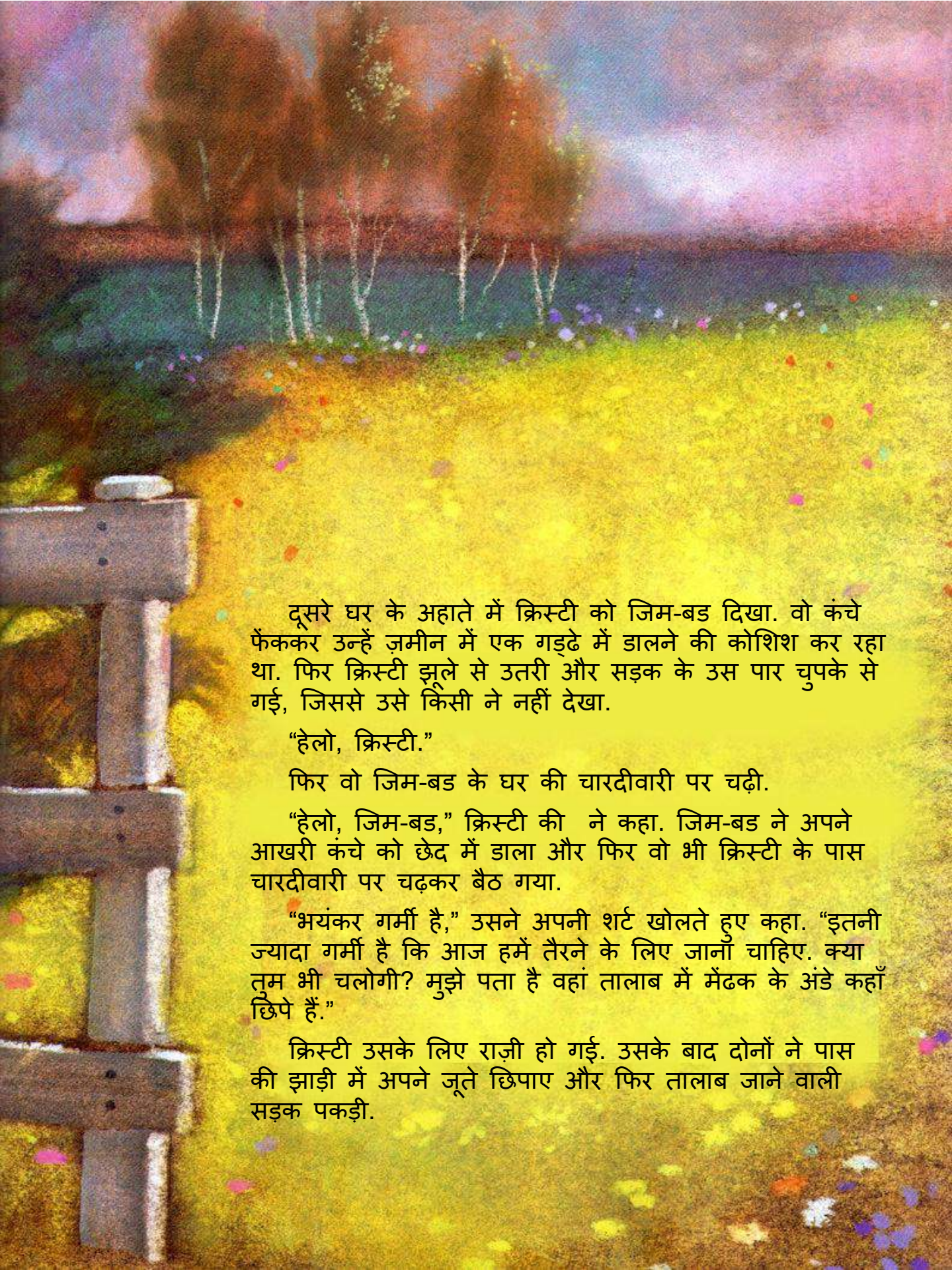

दूसरे घर के अहाते में क्रिस्टी को जिम-बड दिखा. वो कंचे फेंककर उन्हें ज़मीन में एक गड्ढे में डालने की कोशिश कर रहा था. फिर क्रिस्टी झूले से उतरी और सड़क के उस पार चुपके से गई, जिससे उसे किसी ने नहीं देखा.

“हेलो, क्रिस्टी.”

फिर वो जिम-बड के घर की चारदीवारी पर चढ़ी.

“हेलो, जिम-बड,” क्रिस्टी की ने कहा. जिम-बड ने अपने आखरी कंचे को छेद में डाला और फिर वो भी क्रिस्टी के पास चारदीवारी पर चढ़कर बैठ गया.

“भयंकर गर्मी है,” उसने अपनी शर्ट खोलते हुए कहा. “इतनी ज्यादा गर्मी है कि आज हमें तैरने के लिए जाना चाहिए. क्या तुम भी चलोगी? मुझे पता है वहां तालाब में मेंढक के अंडे कहाँ छिपे हैं.”

क्रिस्टी उसके लिए राज़ी हो गई. उसके बाद दोनों ने पास की झाड़ी में अपने जूते छिपाए और फिर तालाब जाने वाली सड़क पकड़ी.

जैसे ही वे एडी-ली के घर के सामने से गुज़रे उसने बहुत उत्सुकता से कहा, “हेलो, क्रिस्टी! हेलो, जिम-बड!”

पर जिम-बड ने क्रिस्टी का हाथ खींचा. “उस बुद्धू के साथ बातें करने के लिए मत रुको.”

एडी-ली अपने बरामदे की सीढ़ियों से उतरकर घर से बाहर निकला. आइसक्रीम की पिघली चॉकलेट उसकी ठोड़ी और शर्ट से टपक रही थी. फिर भी वो खिलखिलाकर हंस रहा था. क्यूंकि जिम-बड ने उसे बिल्कुल अनदेखा किया था, इसलिए क्रिस्टी ने उससे कहा, “एडी-ली, आज तुम्हारा घर पर ही रहना अच्छा होगा.”

एडी-ली ने कुछ भी नहीं कहा. बेचारा दुखी ज़रूर हुआ. क्रिस्टी को लगा कि अच्छा होता अगर वो उसके लिए बहुत सारी लोलीपॉप लाती जिन्हें एडी-ली दिन भर चूसता रहता.

जिम-बड ने दुबारा क्रिस्टी का हाथ खींचा. “चलो, क्रिस्टी!”

“एडी-ली, घर वापिस जाओ. जल्दी करो, घर जाओ.”

“देखो, कितना बुद्धू है, उसे हमारी बात भी समझ में नहीं आई.”

फिर जिम-बड मुड़ा और उसने ज़मीन पर जोर से अपना पैर पटका. “एडी-ली, घर जाओ!”

एडी-ली, मुस्कुराया. “मैं कोई कुत्ता नहीं हूँ, जिम-बड,” उसने कहा.

“फिर कुत्ते जैसे हमारा पीछा मत करो.”

यह सुनकर एडी-ली का मुंह लटक गया और वो धीरे-धीरे करके अपने घर की ओर बढ़ा.

“तुम्हें उसकी भावनाओं को दुखाने का कोई हक़ नहीं है, जिम-बड. माँ ने मुझ से कहा है कि मुझे एडी-ली के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए.”

तालाब जाने के लिए उन दोनों को जंगल से होकर गुज़ारना था. क्रिस्टी को गीली पत्तियों की खुशबू और नंगे पैरों से हरी फ़र्न छूने में बड़ा मज़ा आया. उसके तलुओं को नीचे की ज़मीन, सख्त और ठंडी महसूस हुई.

“वो क्या आवाज़ है?” क्रिस्टी ने पूछा.

जब एक किंगफ़िशर पक्षी पेड़ की टहनी से उठकर तालाब के ऊपर उड़ा तो उस सन्नाटे में एक बहुत तेज़ आवाज़ उठी. कुछ देर वो पानी के ऊपर ही मंडराता रहा और फिर उसने एक गोता लगाया. जब वो पानी से बाहर निकला तो उसकी चोंच में एक मछली थी.

पानी कितना ठंडा है यह जानने के लिए जिम-बड ने अपने पैरों की उँगलियों को तालाब में डुबोया. “देखो, वो रही एक मछली!” वो चिल्लाया.

“मुझे तो यहाँ कहीं भी मेंढक के अंडे दिखाई नहीं दिए?” क्रिस्टी ने कहा.

“शायद उन अण्डों में से अब तक मेंढक बाहर निकल गए होंगे.”

क्रिस्टी को रिझाने के लिए जिम-बड ने शायद, मेंढक के अण्डों की झूठी कहानी रची थी! फिर क्रिस्टी पैरों को रेत में धंसाकर, तालाब के किनारे बैठ गई. रेत की चादर उसे एक रजाई जैसे महसूस हो रही थी.

फिर उन्हें पास की पगडण्डी से अचानक अजीब से क़दमों की आवाज़ सुनाई दी.

“वो किसकी आवाज़ है?” जिम-बड ने डरी हुई आवाज़ में पूछा.

“मुझे पता नहीं.”

आवाज़ और पास आती गई. किसी के क़दमों की आहत. छपाक! छपाक! क्रिस्टी का दिल धड़कने लगा. दोनों छिपने के लिए कोई सुरक्षित स्थान खोजने लगे. तालाब के पास ऊंची-ऊंची घासों के कारण कहीं भागना भी मुश्किल था.

“किसी राक्षस की आवाज़ जैसी लगती है,” जिम-बड ने फुसफुसाती आवाज़ में कहा.

फिर झाड़ियों के बीच से एक “राक्षस” बाहर निकला. पगडण्डी पर एडी-ली धम्म! धम्म! आवाज़ करता हुआ चल रहा था.

“तुम यहाँ क्या कर रहे हो? जिम-बड ने उससे चिल्लाते हुए पूछा. फिर उसने क्रिस्टी की तरफ़ देखकर कहा, “मुझे पक्का पता था कि वही बुद्धू हमारा पीछा कर रहा होगा.” पर उसकी आवाज़ में डर साफ़ झलक रहा था. क्रिस्टी भी डरी हुई थी. एडी-ली वहीं तालाब के किनारे बैठ गया और उन दोनों को देखता रहा.

“देखो जिम-बड, उस सैलामैंडर को! वो अभी बिल्कुल छोटा सा बच्चा है.” क्रिस्टी ने उन्हें तालाब की किनार पर एक छोटे जीव को कुलबुलाते हुए दिखाया. जिम-बड, क्रिस्टी के पास आकर बैठ गया. फिर अचानक एक ज़ोर के छपाके की आवाज़ आई.

“मैंने उसे पकड़ लिया जिम-बड!” एडी-ली ने गुनगुनाते हुए कहा. उसने सैलामैंडर को पकड़कर अपने हाथों को ऊपर उठाया.

“देखो, तुमने भला यह क्या किया, एडी-ली!” जिम-बड ने अपने गीली पैंट की ओर इशारा किया और चिल्लाया. “तुम जाओ, हमें अकेले छोड़ो.”

फिर एडी-ली ने क्रिस्टी की तरफ़ देखा और कहा, “क्रिस्टी, तुम इसे ले लो.”

फिर क्रिस्टी ने अपनी दोनों हथेलियों में उस छोटे से जीव को लिया और उसकी चिकनाहट को महसूस किया.

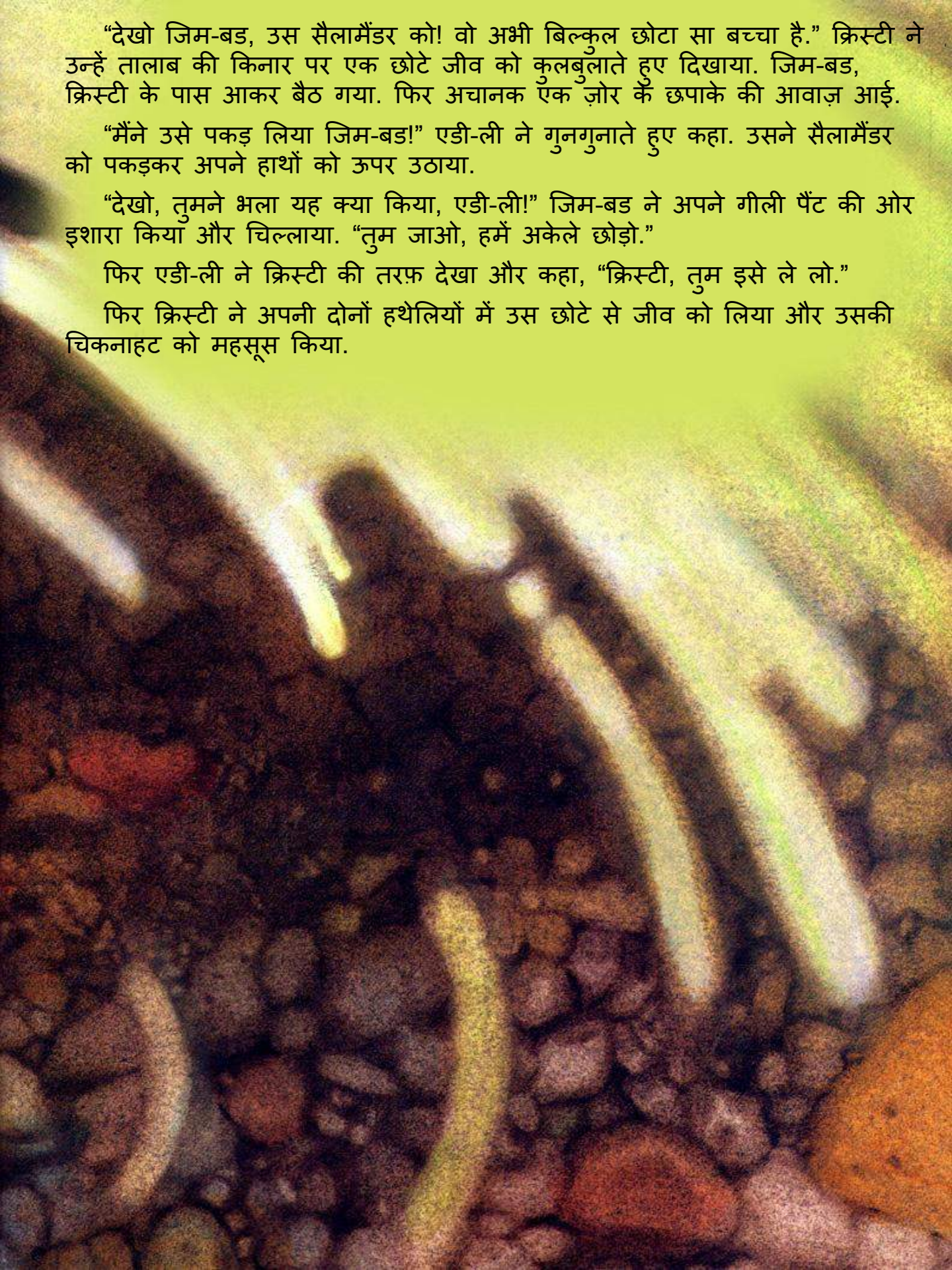

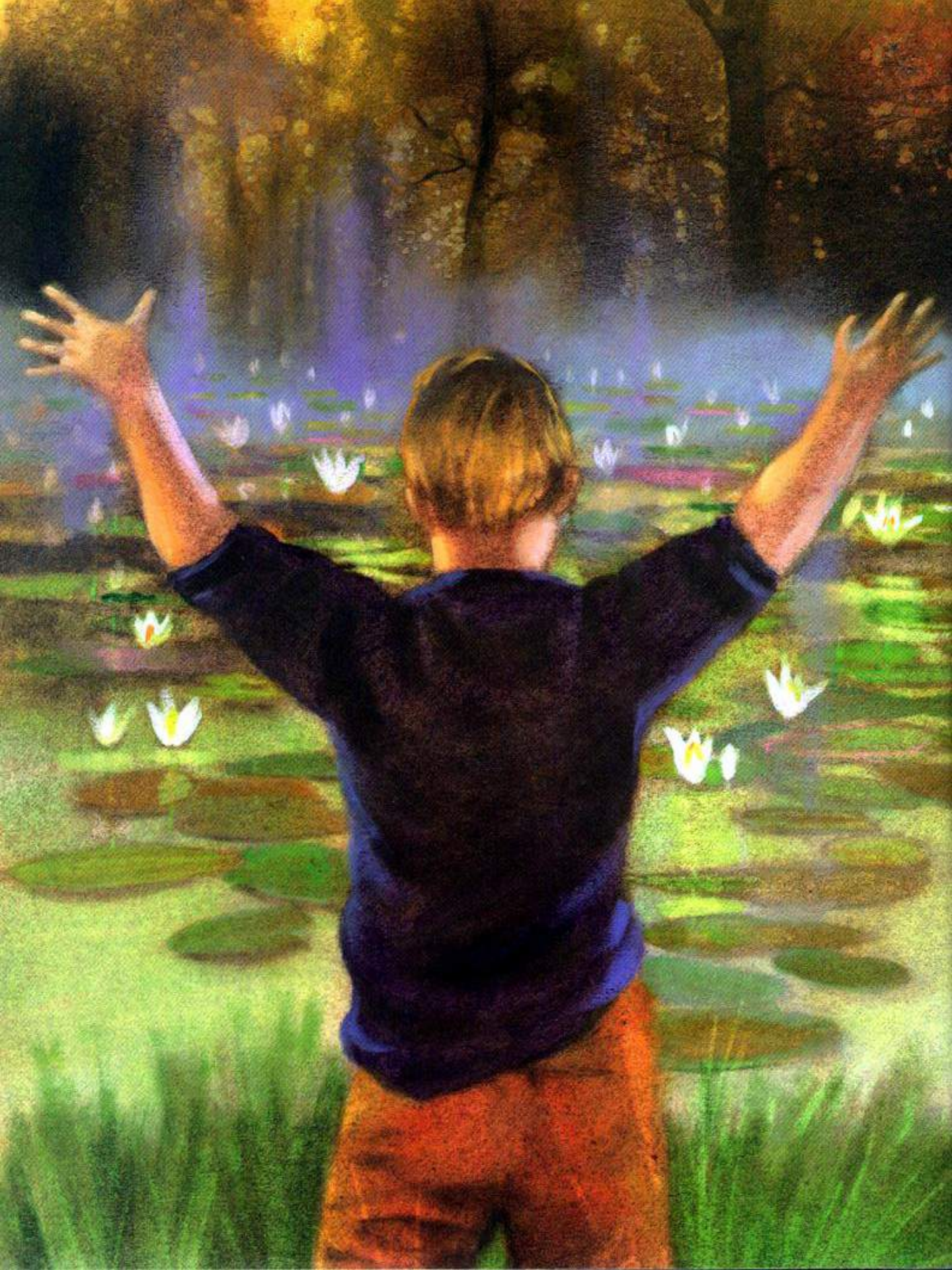

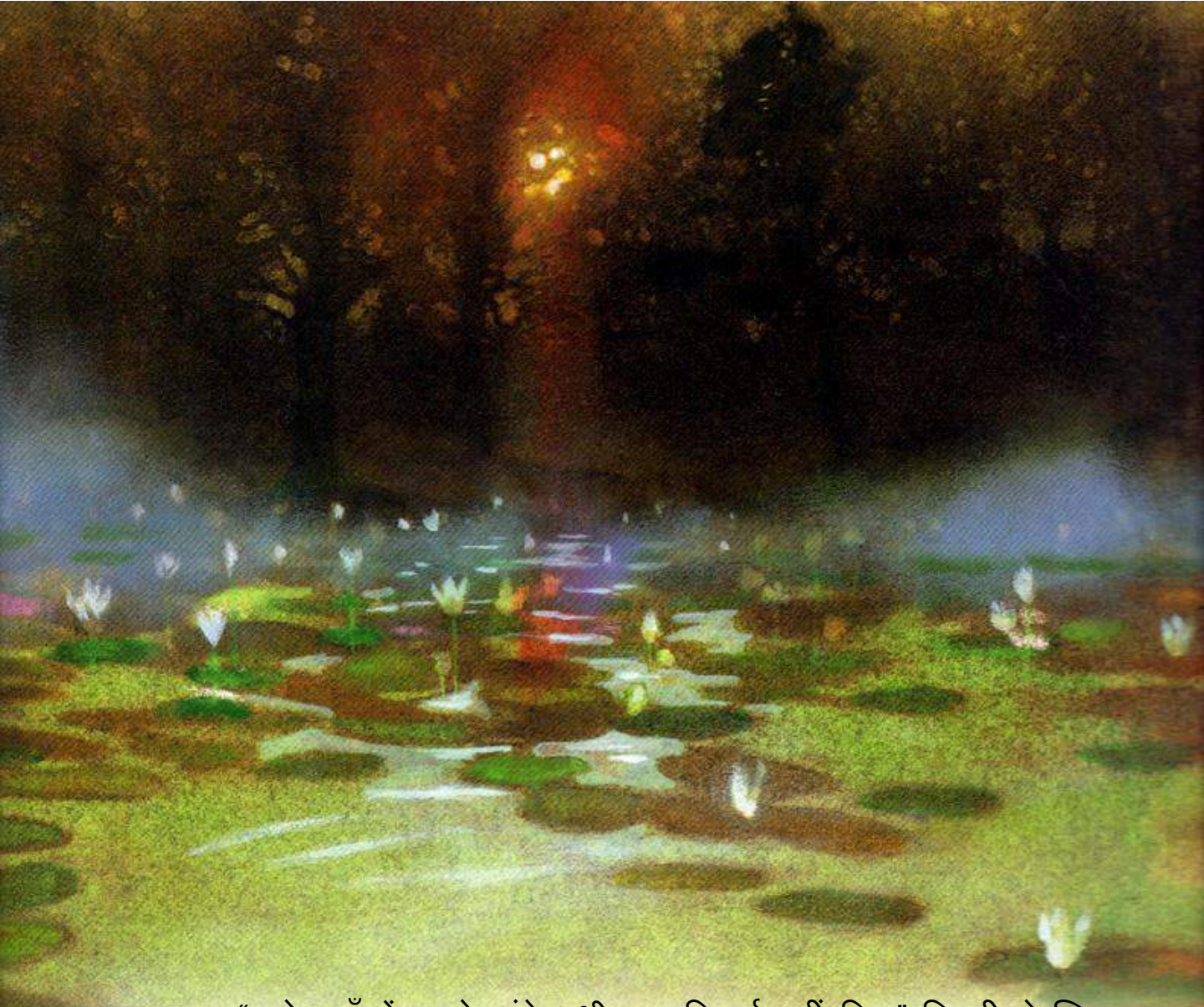

“मुझे यहाँ मेंढक के अंडे अभी तक दिखाई नहीं दिए,” क्रिस्टी ने शिकायत के स्वर में कहा. वे तीनों अब तालाब के किनारे-किनारे चलने लगे.

“सुन्दर, खूबसूरत!” एडी-ली ने तालाब को निहारते हुए कहा. उसके दोनों हाथ हवा में फैले थे और वो टकटकी लगाये कमल के फूलों और उनकी पत्तियों के कालीन को निहार रहा था. “बेहद सुन्दर!”

क्रिस्टी ने पहली बार उन कमल के फूलों को देखा.

“वो फूल कितने सुन्दर हैं! जिम-बड, क्या तुम उनमें से कुछ फूल तोड़ सकते हो. माँ को वो बहुत पसंद आयेंगे. एक भी चलेगा. माँ उसे बड़ी मेज़ पर एक कांच के कटोरे में रखेंगी.”

“क्या तालाब में अन्दर जाने का कोई रास्ता है?” जिम-बड ने पूछा.

“मैं तुम्हारे लिए वो कमल का फूल लेकर आऊँगा, क्रिस्टी,” एडी-ली ने कहा. फिर वो छपाके मारता हुआ पानी में उतरा. कुछ देर में पानी उसके घुटनों तक आ गया, पर कमल का फूल अभी भी उसकी पहुँच से दूर था. फिर निराश होकर वो अपने गीले जूतों में किनारे पर वापिस आया.

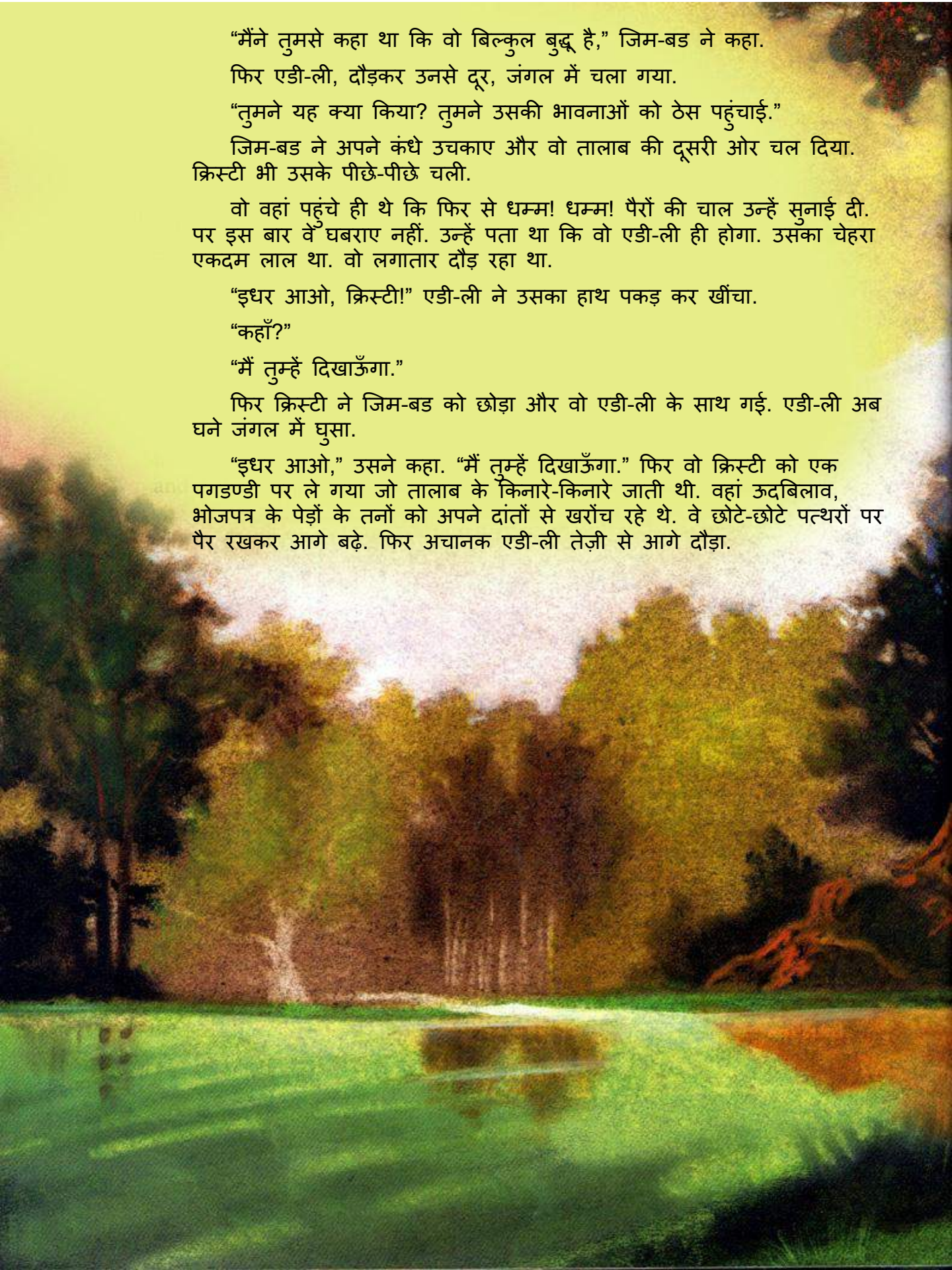

"मैंने तुमसे कहा था कि वो बिल्कुल बुद्धू है," जिम-बड ने कहा.

फिर एडी-ली, दौड़कर उनसे दूर, जंगल में चला गया.

"तुमने यह क्या किया? तुमने उसकी भावनाओं को ठेस पहुंचाई."

जिम-बड ने अपने कंधे उचकाए और वो तालाब की दूसरी ओर चल दिया. क्रिस्टी भी उसके पीछे-पीछे चली.

वो वहां पहुंचे ही थे कि फिर से धम्म! धम्म! पैरों की चाल उन्हें सुनाई दी. पर इस बार वें घबराए नहीं. उन्हें पता था कि वो एडी-ली ही होगा. उसका चेहरा एकदम लाल था. वो लगातार दौड़ रहा था.

"इधर आओ, क्रिस्टी!" एडी-ली ने उसका हाथ पकड़ कर खींचा.

"कहाँ?"

"मैं तुम्हें दिखाऊँगा."

फिर क्रिस्टी ने जिम-बड को छोड़ा और वो एडी-ली के साथ गई. एडी-ली अब घने जंगल में घुसा.

"इधर आओ," उसने कहा. "मैं तुम्हें दिखाऊँगा." फिर वो क्रिस्टी को एक पगडण्डी पर ले गया जो तालाब के किनारे-किनारे जाती थी. वहां ऊदबिलाव, भोजपत्र के पेड़ों के तनों को अपने दांतों से खरोंच रहे थे. वे छोटे-छोटे पत्थरों पर पैर रखकर आगे बढ़े. फिर अचानक एडी-ली तेज़ी से आगे दौड़ा.

“यह है वो!” उसने गर्व से मुस्कुराते हुए कहा.

पगडण्डी के पास जंगल में एक खुला स्थान था जहाँ एक छोटा ताल था. उसके किनारे ऊंची-ऊंची घासें उगी थीं. पेड़ों के झुरमुटों से पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी. जून के गर्म महीने में उस तालाब में साफ़ और ठंडा पानी था. ताल की सतह पर सुन्दर गुलाबी और सफ़ेद रंग के कमल खिले थे. क्रिस्टी इस जंगल में पहले कई बार आई थी पर उसने वो सुन्दर ताल पहले कभी नहीं देखा था.

क्रिस्टी घुटने टेक कर बैठ गई, और उसने पानी में खुद को देखा. ताल में उसे अपना प्रितिबिम्ब दिखाई दिया. वो कमल का एक मुकुट पहने थी. एडी-ली उसे देखकर मुस्कुरा रहा था.

पर लगता था कि वो और कुछ चाहता था.

“इधर आओ क्रिस्टी, मैं तुम्हें दिखाऊँगा.” एडी-ली ने क्रिस्टी का हाथ पकड़ा और फिर वो उसे पगडण्डी पर ताल के दूसरे सिरे पर ले गया.

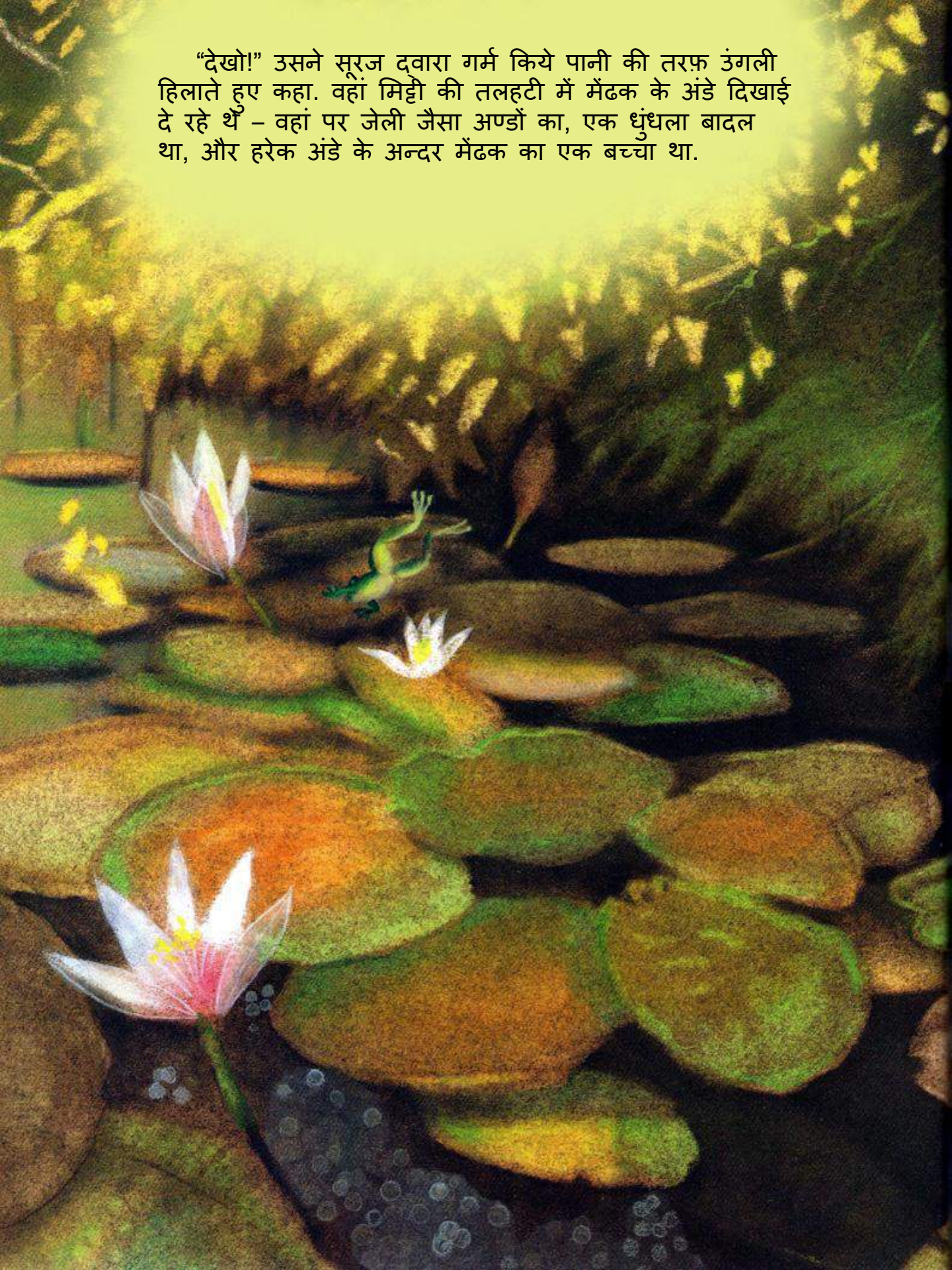

"देखो!" उसने सूरज द्वारा गर्म किये पानी की तरफ़ उंगली हिलाते हुए कहा. वहां मिट्टी की तलहटी में मेंढक के अंडे दिखाई दे रहे थे – वहां पर जेली जैसा अण्डों का, एक धुंधला बादल था, और हरेक अंडे के अन्दर मेंढक का एक बच्चा था.

“मेंढक के अंडे! वाह एडी-ली! तुम तो वाकई में बहुत होशियार हो. तुमने कमल के फूल और मेंढक के अंडे, दोनों चीज़ें खोज निकालीं!” फिर क्रिस्टी ने झुककर उस अण्डों को करीबी से देखा. सूरज की किरणों में वो उन अण्डों में कुछ छोटे मेंढक के बच्चे भी देख पाई.

“अंडे ले जाने के लिए हमें कोई बर्तन चाहिए,” क्रिस्टी ने कहा.

यह सुनकर एडी-ली की आँखों में गुस्सा आया और उसके तेवर चढ़े. “नहीं! नहीं!” उसने कहा.

“जिससे हम किसे बोतल या जार में अंडे घर ले जा सकें.”

एडी-ली ने क्रिस्टी की ओर अपनी उंगली से इशारा किया. उसके मुंह से शब्द बहुत धीरे ही निकले, जैसे बोलने से पहले उसे बहुत सोचना पड़ता हो. “माँ मेंढक ... क्रिस्टी...” उसके आगे वो कुछ और नहीं बोल सका.

“माँ मेंढक बहुत दुखी होगी,” क्रिस्टी ने वाक्य को पूरा किया. “उसके बारे में तो मैंने सोचा ही नहीं था. चलो एडी-ली फिर हम चलकर माँ के लिए एक कमल का फूल तोड़ेंगे.”

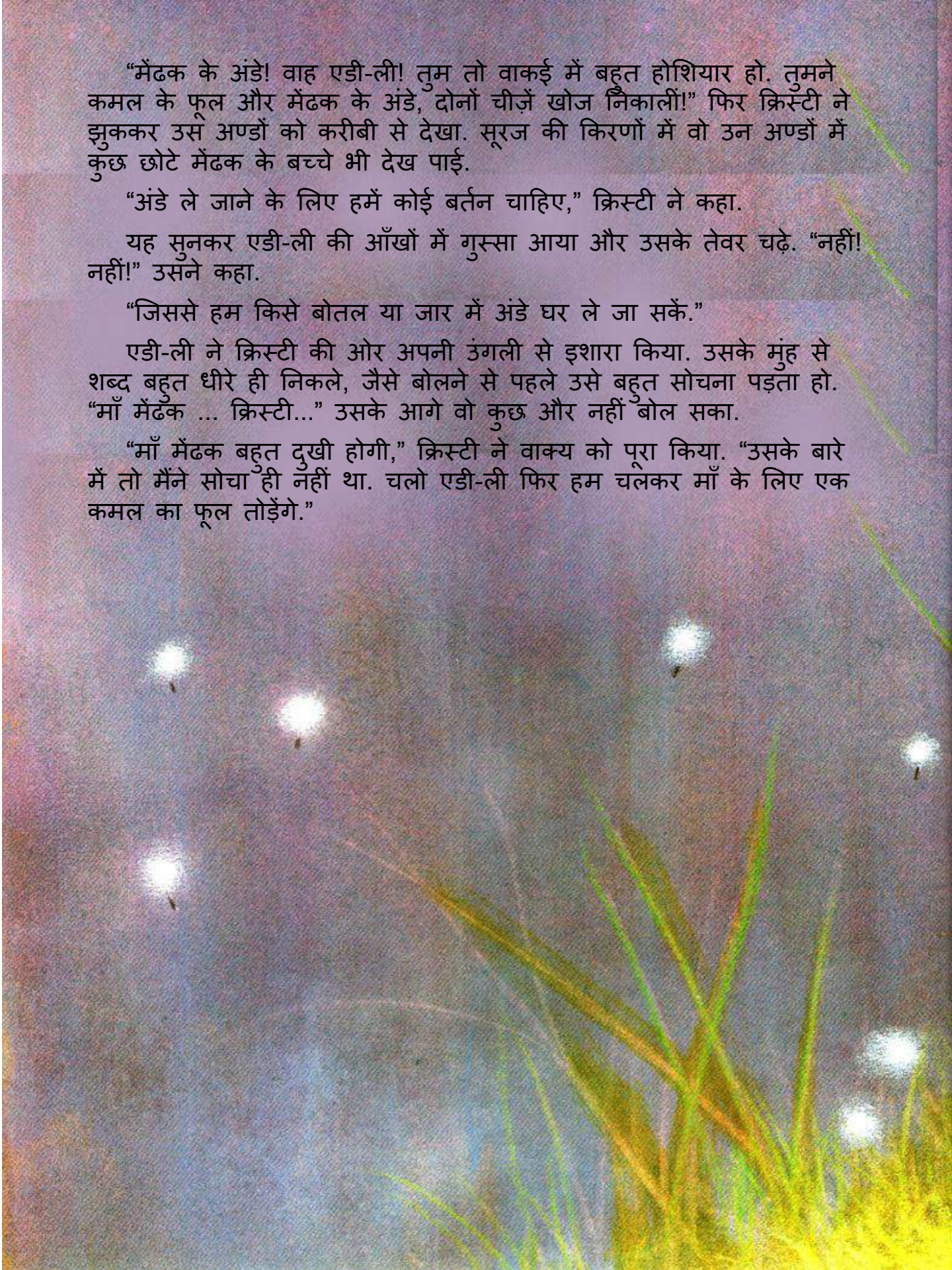

जब वो कमल तक पहुंचे तब तक पानी उनके घुटनों तक था. तभी पानी में कोई चीज़ गिरी. उससे चारों ओर गोलों में पानी की लहरें फ़ैल गईं. उन लहरों में दोनों बच्चों का प्रितिबिम्ब बहुत अजीब लग रहा था. एडी-ली ने उन हिलते हुए प्रतिबिम्बों की ओर इशारा किया.

“तुम काफी अजीब लग रही हो क्रिस्टी.”

पानी की लहरों से क्रिस्टी का चेहरा विकृत हो गया था. अपने बिगड़े चेहरे को छिपाने के लिए क्रिस्टी ने मुंह पर अपना हाथ रख लिया.

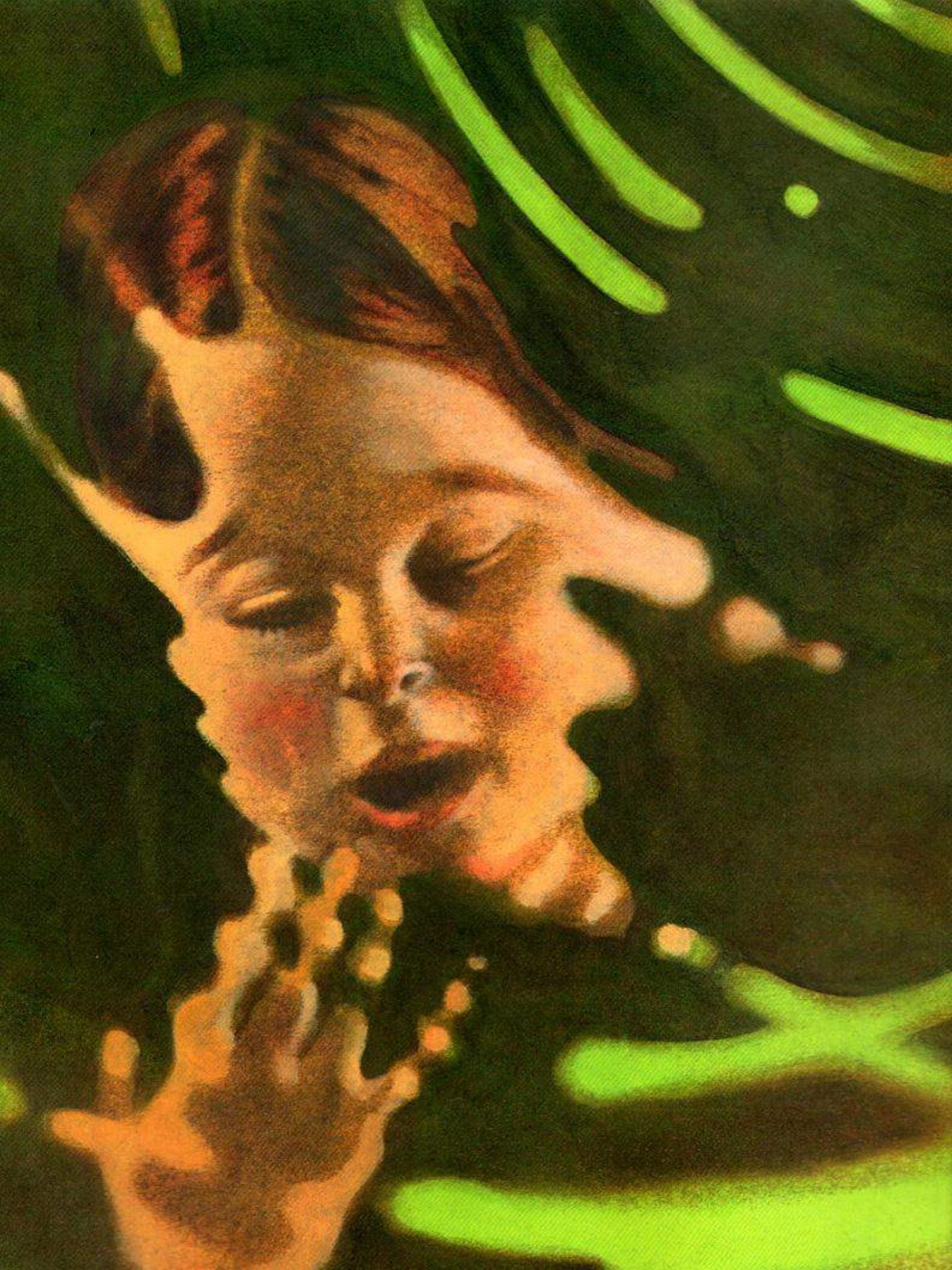

“ठीक है क्रिस्टी,” उसने कहा. “मैं तुम्हें वैसे भी पसंद करता हूँ.” फिर एडी-ली जोर से हंसा और उसने अपना दायाँ हाथ अपने दिल पर रखकर कहा, “जो यहाँ है, बस उससे ही फर्क पड़ता है.”

फिर वो दोनों जंगल से वापिस घर की ओर चले. “जिम-बड!!” क्रिस्टी चिल्लाई. रास्ते पर दोपहर के सूरज की धूप चमक रही थी. “तुम्हें भी यह सब देख कर बहुत मज़ा आएगा!”